दि. ०७/०१/२०१५

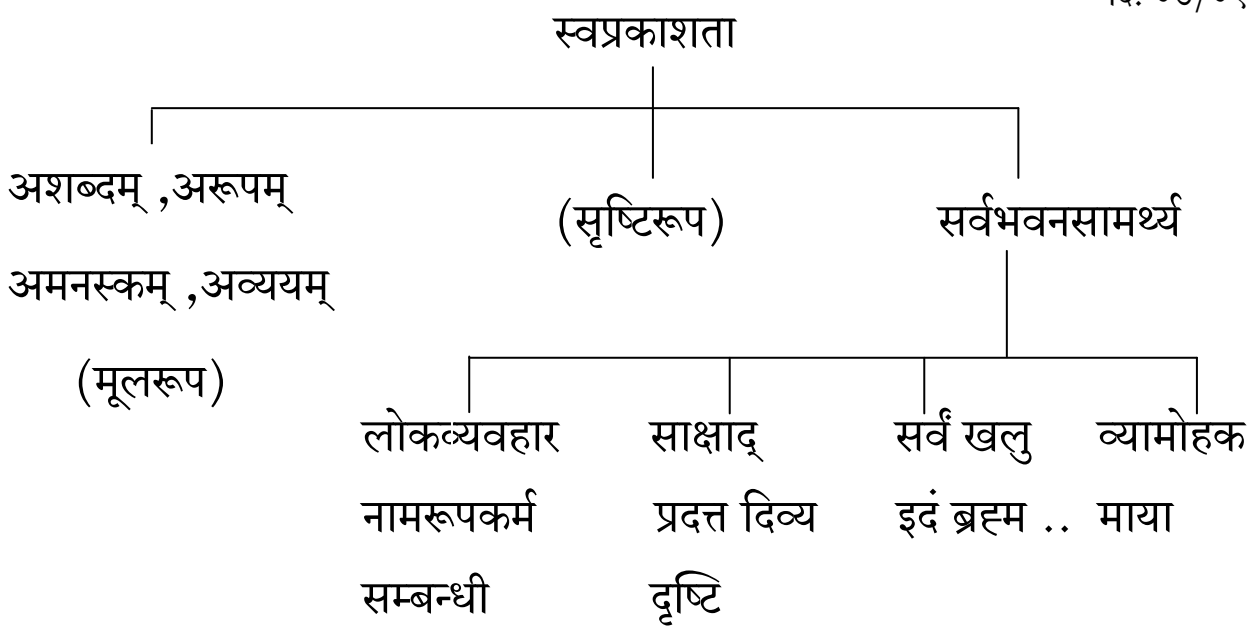
स्वप्रकाशता
अशब्दम् ,अरूपम्
अमनस्कम् ,अव्ययम्
(मूलरूप)
(सृष्टिरूप)
सर्वभवनसामर्थ्य
लोकव्यवहार नामरूपकर्म सम्बन्धी
साक्षाद् प्रदत्त दिव्य दृष्टि
सर्वं खलु इदं ब्रह्म ..
व्यामोहक माया

स्वरूप
श्रवण
(स्वरूप सानिध्यप्रद)
गुण
स्मरण
(स्वरूप सामीप्ये)
लीला
कीर्तन
(बाह्याभ्यन्तर)
पादसेवन
माहात्म्यज्ञान
दास्य
अर्चन
सख्य
सख्य
वंदन
माहात्म्य+सख्य
आत्मनिवेदन

दि. ०८/०१/२०१५

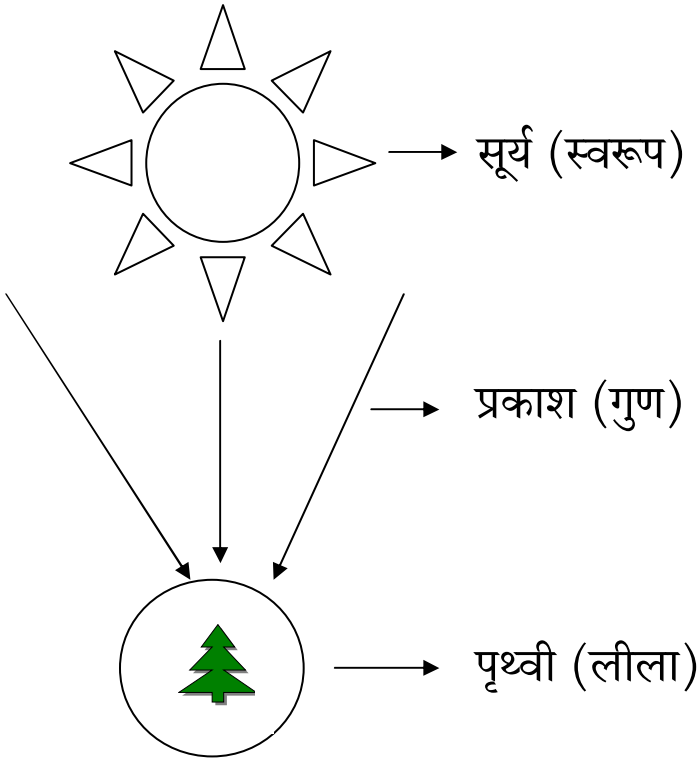

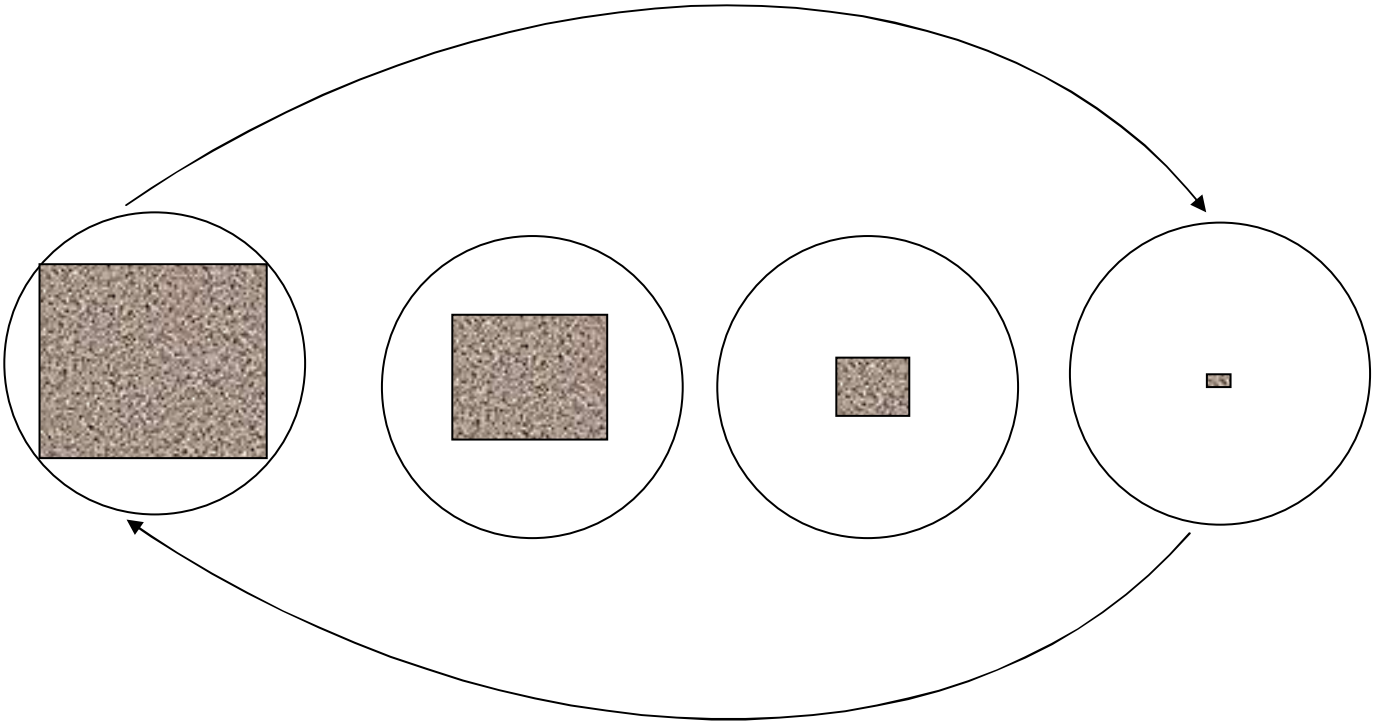

दि. १०/०१/२०१५

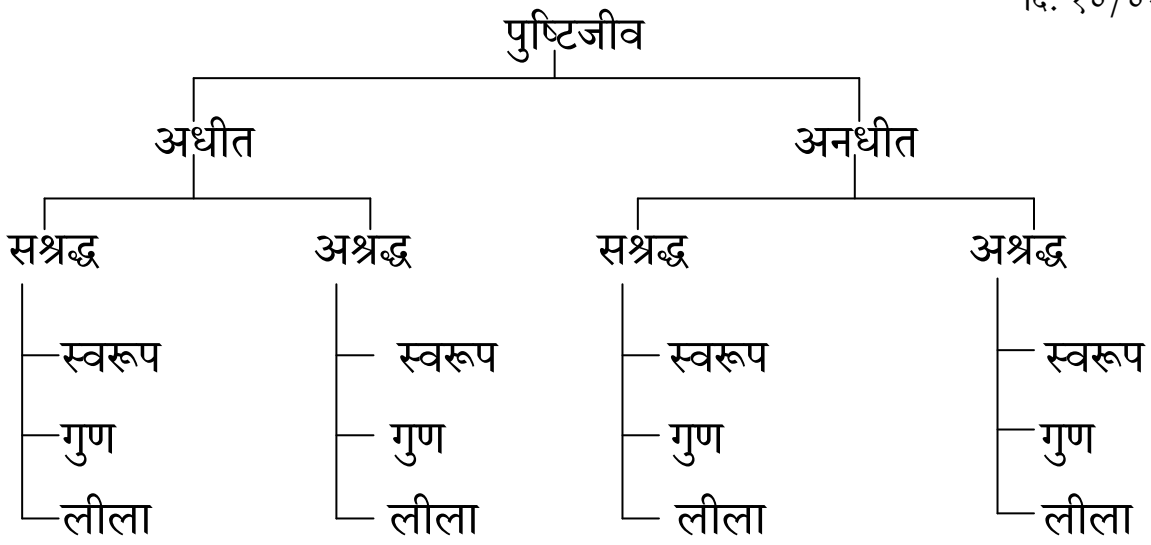
पुष्टिजीव
अधीत
अनधीत
सश्रद्ध
अश्रद्ध
सश्रद्ध
अश्रद्ध
स्वरूप
गुण
लीला
स्वरूप
गुण
लीला
स्वरूप
गुण
लीला
स्वरूप
गुण
लीला

दि. ११/०१/२०१५

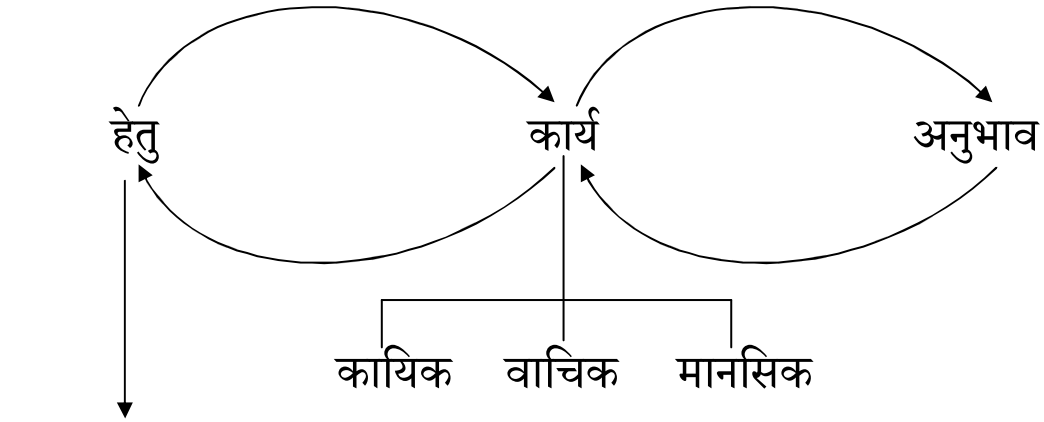

पुष्टिमार्ग

↓

गुरु/स्वतः

↓

प्रपत्ति

↓

श्रवण–स्मरण–कीर्तन

↓

समर्पण

↓

व्रतपर्वयात्रामहोत्सव

↓

भोगरागशृंगार

↓

वर्णाश्रमाचार

↓

तनुवित्तजादारागारपुत्राप्तवित्तादिके विनियोगरूपी सेवा

↓

भक्ति

मूलरूप (+गुण+लीला) भावात्मकरूप (+गुण+लीला)

लघुस्वमार्ग ——→ सर्वत्र भगवद् दृष्टि

पुष्टिसंप्रदाय ——→ हरिगुरुवैष्णव भगवद् दृष्टि

गुरुमदसंप्रदाय ——→ हरिवैष्णवबनानेवाले गुरुमें भगवद्भाव

प.भ.मदसंप्रदाय

कथ्थकडमदसंप्रदाय ⟶ भागवतकथावाचकमें भगवद्भाव एवम्
हरिगुरुवैष्णवको निरूपण जो भागवतमें
आयो वामें भगवद्भाव

दि. १३/०१/२०१५

१)विक्षेप अशक्ति अत्याग्रह प्रतिबंध परपीडा

अहंता ⟷ अविवेक ⟷ ममता

सत् चित् आनंद

कर्म स्वभाव काल

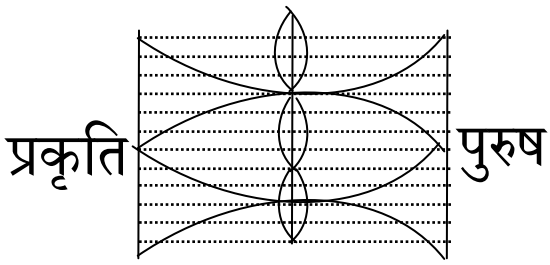

विद्या पुष्टि अविद्या

२)जन्ममद ऐश्वर्यमद श्रुतमद श्रीमद

देहाध्यास अन्त:करण इन्द्रिय प्राण

अध्यास अध्यास अध्यास

३)सहजोत्थ देशोत्थ कालोत्थ संयोगोत्थ स्पर्शोत्थ

अहंता ममता

४)ब्रह्म परमात्मा भगवान् श्रीकृष्ण घरको ठाकोर

स्वरूप अन्त:करण प्राणाध्यास श्रीकृष्णलीला देहाध्यास

विस्मृति अध्यास (इन्द्रियाध्यास)

अत्र (कृष्णावतारे) प्रमाणादि चतुष्टयं भगवानेव

शास्त्रम् अवगत्य मनोवाग्देहै: सेव्य: कृष्ण

प्रमाण अवगम सेव्य फल

यथा वाक्पति (प्रमेय) साधन

अत्र प्रमाणादि चतुष्टयं भगवानेव **Vs** शास्त्रमवगत्य मनोवाग्देहै: कृष्ण सेव्य: